

वशिव हाथी दविस

प्रलमिस के लयि:

वशिव हाथी दविस, प्रवासी प्रजातयिों का सममेलन (CMS), प्रकृतके संरक्षण के लयि अंतर्राष्टरीय संघ (IUCN), हाथी रजिर्व (ERs), हाथयिों की अवैध हत्या की नगरानी (MIKE) कार्यक्रम ।

मेन्स के लयि:

हाथयिों के संरक्षण का महत्त्व और हाथी की प्रजातयिों से संबंधति मुद्दे ।

चर्चा में क्यो?

प्रत्येक वर्ष 12 अगस्त को **वशिव हाथी दविस**, मनाया जाता है, जसिका उद्देश्य हमारे पारस्थितिकी तंत्र में हाथयिों के महत्त्व को स्वीकार करना है ।

- यह हाथयिों के द्वारा दैनिकी जीवन में सामना करने वाले खतरों के प्रतिलोगों में जागरूकता बढ़ाने पर बल देता है । हाथयिों के अवैध शकार, पालतू हाथयिों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार, उनके आवास को क्षति पहुँचाने जैसे कारकों को कम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका नभिता है ।

हाथी दविस का महत्त्व:

• परचिय:

- हाथयिों को कई संस्कृतयिों में पवतिर पशु माना जाता है और एक स्वस्थ पारस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने के लयि ये अत आवश्यक होते हैं ।

- हाथी जैव वविधिता को भी बढ़ावा देते हैं ।

- ये एक बुद्धमिान प्रजाता होती हैं, उनके पास कसी भी स्थल पर रहने वाले प्रजातयिों की तुलना में आकार में सबसे बड़ा दमिग पाया जाता है ।

• जनसंख्या:

- पछिले 75 वर्षों में हाथयिों की आबादी में 50% की कमी आई है ।

- वर्तमान जनसंख्या अनुमान से संकेत मलिता है क वशिव में लगभग 50,000-60000 एशयिाई हाथी हैं ।

- भारत में वशिव की हाथयिों की 60% से अधिक जनसंख्या नविस करती है ।

• ऐतहासिक परपिरेकष्य:

- वशिव हाथी दविस अभयान वर्ष 2012 में अफ्रीकी और एशयिाई हाथयिों को होने वाली दक्कतों के प्रतिलोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से शुरू कया गया था ।

- इस अभयान का उद्देश्य एक स्थायी वातावरण का नरिमाण करना है जहाँ हाथयिों के साथ होने वाले शोषण को रोका जा सके और उनकी देखभाल की जा सके ।

- वशिव हाथी दविस को पहली बार कनाडा के फलिम नरिमाता माइकल क्लार्क और पेट्रीसयिा समिस द्वारा थाईलैंड स्थति हाथी प्रजनन फाउंडेशन के साथ मनाया गया था ।

- वर्ष 2012 में पेट्रीसयिा समिस ने **वर्ल्ड एलीफेंट सोसाइटी नामक एक संगठन** की स्थापना की ।

- संगठन हाथयिों के सामने आने वाले खतरों और वशिव स्तर पर उनकी रक्षा करने की अनविर्यता के बारे में जागरूकता पैदा करने में सफल रहा है ।

• संरक्षण स्थति:

- **IUCN की रेडलसिट में स्थति: संकटग्रस्त ।**

- अफ्रीकी जंगली हाथी- गंभीर रूप से संकटग्रस्त

- अफ्रीकी सवाना हाथी- लुप्तप्राय

- एशयिाई हाथी - लुप्तप्राय

- **प्रवासी प्रजातयिों का सममेलन (सीएमएस):** परशिषिट ।

- **वन्यजीव (संरक्षण) अधनियिम, 1972:** अनुसूची-1

भारत में हाथियों से संबंधित मुद्दे:

- प्रोजेक्ट एलीफैंट द्वारा वर्ष 2017 की जनगणना के अनुसार भारत में जंगली एशियाई हाथियों की सबसे अधिक संख्या (29,964 अनुमानित) है, जो कि हाथियों की वैश्विक आबादी का लगभग 60% है।
 - मानव-हाथी संघर्ष:
 - मनुष्यों और हाथियों के बीच टकराव को मानव-हाथी संघर्ष (HEC) कहा जाता है, जो मुख्य रूप से अधवास को लेकर होता है तथा सरकारों, संरक्षणवादियों और जंगली जानवरों के करीब रहने वाले लोगों के लिये देश भर में एक प्रमुख चिंता का विषय है।
 - प्राकृतिक आवास की कृषति:
 - प्राकृतिक आवास की कृषति और वखिंडन जंगली हाथियों को मानव बस्तियों के करीब ला रहा है जो इन संघर्षों को जन्म देता है।
 - प्रत्येक वर्ष हाथियों के साथ संघर्ष में 500 से अधिक इंसानों की मृत्यु हो जाती है तथा लाखों की फसल और संपत्तिका भी नुकसान होता है।
 - संघर्ष के कारण प्रतशिोध में कई हाथी भी मारे जाते हैं।

सरकार द्वारा की गई पहल:

- प्रोजेक्ट एलीफैंट: इसे 1991-92 में पर्यावरण और वन मंत्रालय की केंद्र प्रायोजित योजना के रूप में शुरू किया गया था।
 - वर्ष 2007, 2012 और 2017 में जंगली हाथियों की आबादी का अनुमान लगाया गया जिसमें कर्नाटक में हाथियों की संख्या सबसे अधिक है, इसके बाद असम और केरल का स्थान है।
- हाथी रज़िर्व: यह भारत सरकार की सफ़िरशि के अनुसार राज्य सरकारों द्वारा अधसिचति एक प्रबंधन इकाई है।
 - इसमें संरकषति कषेत्र, वन कषेत्र, गलियारे और नज़ी/आरकषति भूमि शामिल हैं।
 - अगस्त्यमलाई (तमलिनाडु) देश का 32वाँ हाथी अभ्यारण्य होगा।
- हाथियों की अवैध हत्या की नगिरानी (Monitoring of Illegal Killing of Elephants- MIKE) कार्यक्रम: इसे CITES के पक्षकारों का सम्मेलन (Conference Of Parties- COP) द्वारा अज्जापति किया गया है।
 - इसकी शुरुआत दक्षिण एशिया में (वर्ष 2003) नमिनलखिति उद्देश्य के साथ की गई थी:
 - हाथी रेंज देशों के लिये उचित प्रबंधन और प्रवर्तन नरिणय लेने हेतु आवश्यक जानकारी प्रदान करने के लिये।
 - हाथी आबादी के दीर्घकालिक प्रबंधन हेतु रेंज देशों के भीतर संस्थागत क्षमता का नरिमाण करने के लिये।
 - भारत में माइक स्थल:
 - चरिंग-रपि हाथी रज़िर्व (असम)
 - देवमाली हाथी रज़िर्व (अरुणाचल प्रदेश)
 - देहगि पटकई हाथी रज़िर्व (असम)
 - गारो हलिस हाथी रज़िर्व (मेघालय)
 - पूरवी दूआर हाथी रज़िर्व (पश्चिम बंगाल)
 - मयूरभंज हाथी रज़िर्व (ओडिशा)
 - शविलकि हाथी रज़िर्व (उत्तराखंड)
 - मैसूर हाथी रज़िर्व (कर्नाटक)
 - नीलगारी हाथी रज़िर्व (तमलिनाडु)
 - वायनाड हाथी रज़िर्व (केरल)

वर्षों के प्रश्न:

प्रश्न. भारतीय हाथियों के संदर्भ में नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजिये: (2020)

1. हाथियों के समूह का नेतृत्व मादा करती है।
2. इनके गर्भधारण की अधिकतम अवधि 22 महीने हो सकती है।
3. एक मादा हाथी सामान्य रूप से केवल 40 वर्ष की आयु तक बच्चे को जन्म दे सकती है।
4. भारतीय राज्यों में सबसे अधिक हाथी जनसंख्या केरल में है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2 और 4
- (c) केवल 3
- (d) केवल 1, 3 और 4

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- हाथियों के झुंड का नेतृत्व सबसे पुरानी और बड़ी मादा सदस्य (झुंड की माता) द्वारा किया जाता है। इस झुंड में नर हाथी की सभी संतानें (नर और मादा) शामिल होती हैं। **अतः कथन 1 सही है।**
- हाथियों में सभी स्तनधारियों की सबसे लंबी गर्भकालीन (गर्भावस्था) अवधि होती है, जो 680 दिनों (22 महीने) तक चलती है। **अतः कथन 2 सही है।**
- 14 से 45 वर्ष के बीच की मादा हाथी लगभग हर चार साल में बच्चे को जन्म दे सकती हैं, जबकि औसत जन्म अंतराल 52 साल की उम्र में पाँच साल और 60 साल की उम्र में छह साल तक बढ़ जाता है। **अतः कथन 3 सही नहीं है।**
- हाथी जनगणना 2017 के अनुसार, कर्नाटक में हाथियों की संख्या सबसे अधिक (6,049) है, इसके बाद असम (5,719) और केरल (3,054) का स्थान है। **अतः कथन 4 सही नहीं है।**

अतः विकल्प (a) सही है।

स्रोत: द द्रिष्टि

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/world-elephant-day>

